International Journal of Applied Research 2017; 3(5): 833-834

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2017; 3(5): 833-834
www.allresearchjournal.com
Received: 27-03-2017
Accepted: 29-04-2017

Amit Raj
Research Scholar, Magadh University, Department of Pali Language, Bihar, India

Corresponding Author:
Amit Raj
Research Scholar, Magadh University, Department of Pali Language, Bihar, India

दलित विचार बौद्ध धर्म के आलोक में

Amit Raj

प्रस्तावनाः

आज तक दुनिया के इतिहास में दुखियों के जितने आंसू महात्मा बुद्ध ने पोछे है, उतना शायद ही दूसरा कोई। उन्होने दुख और गरीबी को ईसा मसीह की भाँति ईश्वर का वरदान नही माना। दुख का विश्लेषण उनकी वैचारिक आध्यात्मिक यात्रा का प्रस्थान बिन्दु है और दुख मुक्ति का आखिरी पड़ाव। तथागत बुद्ध के अनुसार धर्म का उपदेश्य संसार की उत्पत्ति की व्याख्या करना न होकर, संसार को कैसे बदला जाए, कैसे यहाँ का दुख–दर्द मिटाया जाए, होना चाहिए। इसीलिए सर्वप्रथम दुख की बात की और संसार को दुख पूर्ण बताया। जब दुख के स्वरूप को समझा जाता है, वह भी दुखात्मक होता है। अज्ञान के कारण वस्तु के वास्तविक स्वरूप को न समझने के कारण कुछ वस्तुएं और अनुभूतियों को हम सुखात्मक मान लेते है जब कि अंततः उनसे दुख ही मिलता है। दूसरे सुख के समाप्त हो जाने का दुख उपर से। इस प्रकार महात्मा बुद्ध के अनुसार संसार दुखात्मक और क्षणिक है तथा समस्त दुखों का कारण अज्ञान या नासमझी है।

अज्ञान के कारण दलितों को नरक सदृश अनेकानेक दुखो का भोगना पड़ता था। उत्तर वैदिक काल में अपने निजी स्वार्थ के लिए बनायी गयी जातिवादी व्यवस्था को ईश्वर कृत घोषित कर ब्राहमणो ने अपने को शीर्ष पर रखा और दलितों और शुद्रों को सबसे नीचे। दलित जातियाँ उपर की तीनो जातियों की सेवा करेगी, अस्पृश्य होने के कारण बस्ती से बाहर बसेगी, शिक्षा और अच्छे संस्कारो से वंचित बड़ी जातियो की कृपा पर जीवन बितायेगी, कुछ दिनो बाद दलित जातियां भी इस व्यवस्था को अपनी नियति मान ली थी, जिसके चलते उनका जीवन पशुओं से बदतर कीड़े–मकोड़े जैसा हो गया था। न पेट भर भोजन मिलता था और न तन ढकने को वस्त्र। अपनी छोटी–छोटी आवश्यकताओं के लिए वे बड़ी जातियो का मुंह ताकते थे। ऐसी दलित जातियों में चेतना जागृता करने के लिए महात्मा बुद्ध ने घोषणा की कि न कोई जन्म से शुद्र हाता है और कोई ब्राह्मण्। कर्म से ही उच्च और नीच होते है। शास्त्र और ईश्वर के भय से दलित जातियां जो इस पतित व्यवस्था को मानने के लिए बाध्य होती थी, तो महात्मा बुद्ध ने शास्त्र और ईश्वर दोनो को मानने से इन्कार कर दिया। केवल इन्कार ही नहीं किया बल्कि इन्कार के लिए तर्क भी प्रस्तुत किया और यह भी नही कहा कि मुझे ईश्वर मानो या ईश्वर की संतान या ईश्वर का देवदूत मानो जैसा कृष्ण, ईसा मसीह और मुहम्मद साहब ने कही है। उनहोने सीधे–सीधे स्पष्ट शब्दो में कहा, ''तुम मेरी बात इसलिए मत मानों कि मैं कह रहा हूँ। उसे बुद्धि से परखो, तर्क की कसौटी पर कसो, यदि खरी उतरी तब मानो। किसी बात को तुम सत्य इसलिए मत मानो कि वह शास्त्रों में लिखी है या उसको कोई बहुत बड़ा संन्यासी या महात्मा कह रहा है। बुद्ध ने स्वयं बुद्धत्व प्राप्ति से पूर्व कई गुरूओं, संन्यासियों और योगियो के पास गये, लेकिन किसी पर अंधविश्वास नहीं किया। अनुभव और तर्क पर उनकी बात को परखा और जितनी सही लगी उतनी माना और शेष को नकार दिया और छोड़ते हुए बुद्धत्व के मार्ग पर बढ़ते रहे और अंत में अकेले हुए बुद्धत्व प्राप्ति के लिए प्रवृत्त हुए। न कोई गुरू उनके साथ था, न कोई ईश्वर और न कोई शास्त्र। वह थे, उनके दृढ संकल्प शक्ति और बुद्धत्व को प्राप्त करने की प्रबल जिज्ञासा। बुद्धत्व प्राप्त के बाद बुद्ध ने कहा बलात् ओढ़ी गई श्रद्धा और विश्वास कभी धोखा दे सकता है, डिग सकता है, लेकिन तर्क और विकेके से वरण की गयी श्रद्धा और विश्वास कभी डिग नही सकता। तथागत बुद्ध की इन्हीं विशेषता से मंत्र मुग्ध होते हुए ओशो लिखते है – ''बुद्ध धर्म के पहले वैज्ञानिक है। उनके साथ श्रद्धा और आस्था की जरूरत नही है। उनके साथ तो पर्याप्त समझ है। अगर समझने को राजी हो, तो बुद्ध की नौका पर सवार हो जाओ। अगर श्रद्धा भी आयेगी तो समझ की छाया होगी। लेकिन समझ से पूर्व श्रद्धा की मांग बुद्ध की नही है।'' (एस धम्मो सनंतनो, भाग–1, पृ० 5) इसी वैज्ञानिकता, बुद्धिवादिता और तार्किकता की प्रशंसा करते हुए बीसवीं शताब्दी के प्रखर दार्शनिक, गणितज्ञ वण्ट्रेण्ड रसेल लिखते हैं – ''ईसाई धर्म में पैदा होकर भी मैं ईसाई न बन सका, क्योंकि जीसस का व्यक्तित्व अवैज्ञानिक है, लेकिन बुद्ध के साथ ऐसा कुछ नही है'', हिन्दू धर्म में कभी कोई शूद्र ब्राहमण नही बन सकता था,

शुद्र शम्बूक का इसी प्रयास में सर काट लिया गया था। शुद्र की बात छोड़िए, क्षत्रिय विश्वमित्र को ब्रह्मा के समानांतर सृष्टि रचना की शक्ति सम्पन्नता के बाद भी ब्रहमर्षि नहीं स्वीकार किया गया और ब्राहमणवादी व्यवस्था को चुनौती देने कारण इतने बड़े पराक्रमी, तपस्वी और ज्ञानी के व्यक्तित्व को खलनायकों की भाँति प्रस्तुत किया गया। बौद्ध धर्म में इस प्रकार का कोई प्रतिबन्ध नही है। महात्मा बुद्ध ने केवल वैचारिक विरोध ही नही किया अपितु व्यवहार में उतारा भी और जोरदार ढंग से जातिवाद का विरोध करते हुए अनेकानेक दलितों को संघ में दीक्षित किया और वे अर्हत्व को प्राप्त किये तथा ब्राहमणो के बराबर उपदेश करते थे। संघ में प्रवेश लेने वालों में दलित जाति के नाई उपालि, चाण्डाल कन्या प्रकृति, दासी खज्जुत्तरा, भंगी सुनीत, निम्न जाति के सुमंगल, अछूत बालक सोपाक और सुप्पिय, कुष्ठरोगी प्रबुद्ध आदि प्रमुख है। शाक्य राजकुमारो के साथ उनका नाई उपालि भी संघ में प्रवज्जित होने वाल भिझू नमन करते हुए सदा सम्मान देगा। तथा राजकुमारो का स्वामिभाव जाता रहे। सभी राजकुमार उपालि को सम्मान देकर नमन करते थे। उपालि अपनी स्मरण शक्ति के चलते बुद्ध वचन की इन्साइक्लोपीडिया (विश्वकोष) थे। दलित जाति के प्रवज्जित सभी भिक्षु अर्हत्व को प्राप्त किये।

महात्म बुद्ध और बौद्ध धर्म की इन आध्यात्मिक और समाजिक क्रांतिकारी अवधारणाओं के चलते दलित जातियों में एक चेतना जागृत हुई जो जातिवाद को चैलेंज करने के लिए समाज बुद्धिवाद और तर्क को बढ़ावा दिया तथा साथ ही ईश्वर के अस्तित्व और वेदो की अपौरूषेयता को चुनौती दी। ईश्वर को बौद्ध धर्म ही नहीं मानता ऐसी बात नही है – जैनियो ने ईश्वर को नही माना है और तो वैदिक मतावलम्बी सांख्य और मीमांसा भी ईश्वर को नही मानते है। वेद की अपौषयता को न्यायविरान्त आदि भी चुनौती देते है, लेकिन किसी ने ब्राह्मण जाति व्यवस्था को व्यवहारिक रूप से बौद्ध धर्म जैसी चुनौती नही दी थी।

इसलिए ब्राह्मणवादी व्यवस्था के आचार्य जिनके पोंगा पंथाई की नींच बुद्ध ने हिला दी थी, बौद्ध धर्म के पीछे पड़ गये ऐसे लोगों द्वारा बुद्ध को और उनके अनुयायियों के लिए –बुद्ध; शब्द का संबोधन किया जाता था। लेकिन बुद्ध ने स्वतंत्रता, समानता, बधुत्व और मैत्री की चेतना की जो मशाल जलाई थी उसके आलोक में निम्न जातियों ने समाजिक प्रतिष्ठा के साथ–साथ राजनैतिक सत्ता को भी प्राप्त किया। दलित जातियाँ जिन्होने राजसत्ता पाई थी उसमें नागवंश, नंदवंश, पालवंश आदि प्रमुख है।

बौद्ध धर्म का इस देश से प्रभाव समाप्त होने के साथ साथ दलितों के उपर शोष्ज्ञण और अत्याचार की मात्रा में भी बढ़ोतरी होने लगी अधिकांश संतों ने अपने ईश्वर के समक्ष अत्यधिक दैन्य भाव समर्पित किया जिसमें दयनीयता की भावना ईश्वरीय रूप में और अधिक मजबूत हुई थी। कवेल कबीर ने खुलकर जातिवाद व्यवस्था को चुनौती दी। जिससे वे समाजिक प्रतिष्ठा को प्राप्त किये। कबीर केवल आध्यात्मिक क्षेत्र में दलितों को जागृति कर सके।

आधुनिक भारत में ज्योतिराव फूले ने 'सत्य शोध समाज' और 'गुलाम गिरी' पुस्तक के मायम से जातिवाद का सबसे अधिक विरोध किया और दलिते के शोषण की समस्त शास्त्रीय और ईश्वरीय अवधारणाओं को तार तार कर दिया बुद्ध, कबीर और ज्योतिराव फूले को आदर्श मानकर दलितों के सबसे बड़े बुद्धिजीवी डा0 भीमराव अम्बेदकर ने इसी समाजिक प्रताड़ना और अपमान से तंग आकर घोषणा कीये कि 'मैं हिन्दू होकर जन्मा हूँ, इसमें मेरा बस नही था, लेकिन हिन्दु होकर मरूंगा नहीं।' अम्बेदकर मनुष्य के लिए धर्म को आवश्यक मानते थे। इसलिए अम्बेदकर के समक्ष समस्या थी हिन्दू धर्म छोड़कर कौन सा धर्म स्वीकार किया जाए जिसमें दलितो के अधिकार, सम्मान, भारतीयता और राष्ट्रप्रेम सुरक्षित रहे। इस दृष्टि से उन्होने विश्व के सभी धर्मो का अध्ययन किया तो बौद्ध धर्म उनको दलितो के लिए सबसे उपर्युक्त लगा। क्योंकि बौद्ध धर्म नव केन्द्रित मानवता प्रधान धर्म है, जिसमें मानव के समक्ष ईश्वर का नकार दिया।

इस धर्म ने शोषित पीड़ित और दलित जनों को जितनी समाजिक प्रतिष्ठा दिलाई उतना शाद किसी धर्म ने नही। इस धर्म ने अपृश्यता के कलंक को सबसे अड़ी चुनौती दी है। यह धर्म स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व प्रधान धर्म है। जिसकी खोज अम्बेदकर को थी। यह धर्म दलितों को वे सारे अधिकार और सम्मान प्रदान करता है, जो हिन्दु धर्म की अन्य बड़ी जातियों का प्राप्त था। इन्हीं धर्म की विशेषताओं को बुद्धत्व प्राप्ति के बाद पहली बार धर्म देशना के लिए कृत संकल्प होने के अवसर पर ब्रहमाजी ने कहा था, यह शुभ संवाद सुनकर प्रसन्न हो जाओ हमारे बुद्ध नये संसार की बुराईयो को कष्टों के मूल कारण को जान लिया है। इससे मुक्त होने का उपाय भी ज्ञात है।

उपर्युक्त कारणो से डा0 अम्बेदकर ने अपने लाखो अनुयायियों के साथ 1956 में बौद्ध धर्म ग्रहण कर दलितों में एक नई चेतना का स्फुरण किया जिसके आलोक में आज तक अनेक दलित आंदोलन चलाये जा रहे है और अनेकानेक दलित अपने अधिकार एवं कर्तव्य का रास्ता तलाश रहे हे। बौद्ध धर्म के करूणा, प्रेम और मैत्री के आलोक में स्वतंत्रता समानता और बंधुत्व की संघीय भावना स्वतंत्र भारत के संविधान का केन्द्रिय बिन्दु बनी जिसमें दलितें को विकासित करके मुख्य धारा में लाने के लिए अनेक कानून बनाये गये है। दलित आंदोलन जो बौद्ध धर्म के आलोक में डा0 अम्बेदकर द्वारा चलाया गया था, वह आज वर्तमान दलित नेताओं के स्वार्थी राजनीति के चलते एकदम आगे नही बढ़ पाया। दलित आंदोलन के लिए डा0 अम्बेदकर ने बौद्ध धर्म के त्रिरत्न में 'बुद्ध शरणं गच्छामि' धम्मं शरणं गच्छामि' 'संघं शरणं गचछामि' को समाजिक और रानजीतिक दृष्टि से व्याख्या करके नारा दिया था – दलितों शिक्षित बनो, संगठित बनो और अन्याय के खिलाफ अपने अधिकार के लिए संघर्ष करो। डा० अम्बेदकर के इन्हीं नारो के आलोक में राजनेताओं को अपने निजी राजनीतिक स्वार्थो को त्याग कर दलितों के हित में पूर्ण विचार कर दलित चेतना को दिशा देने की आवश्यकता है।

तथागत बुद्ध का व्यक्त्वि आध्यत्मिकता की पराकाष्ठा था। बुद्ध ने ईश्वर को नकारा लेकिन उनके विरोधियों ने उन्हें ही ईश्वर का अवतार माना जो गलत हुआ।

राम और कृष्ण को आततायी को मारने के लिए अस्त्र उठाना पड़ता है। जबकि बुद्ध के समक्ष अत्याचारी का हथियार ही नही उठता और उसका हृदय परिवर्तित होकर अर्हत्व को प्राप्त करता है। बुद्ध को आदि शंकराचार्य ने योगियों में चक्रवर्ती कहा, वण्ट्रेण्ड रसेल ने उन्हें वैज्ञानिक और तार्किक व्यक्त्वि वाला परम धार्मिक बताया और ओशो ने धर्म के इतिहास मे बुद्ध को प्रथम वैज्ञानिक बताया आधुनिक वैज्ञानिक क्रांति के अनेक मसीहा बुद्ध के वैचारिकता के आगे पीछे घूमते दिखाई देते है। चाहे वे मार्क्स, लेनिन, गाँधी, सुभाष आदि ही क्यो न हो जीवन की समग्रता, करूणा, प्रेम, मैत्री, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की बुद्ध द्वारा जलायी गयी मशाल मनुष्य को केन्द्र में रखकर चलाए गए सभी प्रकार के आंदोलनों का मार्ग सदैव प्रशस्त करती रहेगी।

संदर्भ :–

1. भगवान बुद्ध एवं जाति प्रथा – भिक्षु यू० धम्म रत्न, पृ–11
2. पुरूष सूक्त, ऋग्वेद, 1
3. मज्झिम निकाय – 1
4. सुत निपात–पृ 111–114